रामचरित मानस और उसकी प्रासंगिकता राजनीतिक एवं सांस्कृतिक परिवेश मे

गोस्वामी तुलसी दासजी की रामचरित मानस की रचना करने से पूर्व कितनी ही रामायणों एवं राम काव्यों की रचना हो चुकी थी ।[105] उन सब में सर्वाधिक प्रसिद्धि वाल्मीकि रामायण को लोग कभी कभार प्रसंगवश ही याद करते हैं परन्तु इसके ठीक विपरीत तुलसीदास जी की रामचरित मानस आज भी जनमानस के बीच उतना ही लोकप्रिय है जितना आज से 400 वर्ष पूर्व था ।

इस परिस्थिति का अध्ययन करने से यह ज्ञात होता है कि वर्तमान समय में तुलसी दास जी की रामचरित मानस को इसीलिवए लोकप्रियता मिली क्योंकि वह जन मानस के हृदय को अधिक स्पर्श करती है। वह तुलसीदास जीने जन भाषा अवधी में लिखी है और आदि कवि वाल्मीकि की रामायण संस्कृति में है जो जन साधारण की समझ से परे है । दिन प्रतिदिन लोगों का रूझान अंग्रेजी भाषा की ओर बढता जा रहा है और संस्कृत उसे दूर जा रही है । इसीलिए रामचरित मानस सामान्य से सामान्य व्यक्ति के समझाने योग्य है ।

उसमें जिन परिस्थितियों का वर्णन किया गया है वे सब हमारे चारों और घटित होती हुई लगती है । हर घर में भाइयों में झगड़ा होता है सम्पत्ति के नाम पर गृहकलद आम बात है सौतिली माँ की समस्या आज भी वैसी ही विद्यमान है जैसी की उसकाल मे थी नारियों के हरण आज भी होते हैं । एक से अधिक पत्नी वाले आज भी दुःखी रहते हैं जो बलवान है उसी को सब कुछ प्राप्त होता है । आज सन्दर्भ बदल गये हैं जिसकी लाठी उसकी भैंस से इसी बात को स्पष्ट किया जाता है । तुलसीदास जीने मर्यादा पुरषोत्तम श्रीराम का ही चित्रम नही किया है अपितु रामकथा[106] के माध्यम से एक ऐसे रामचन्द्र की प्रस्तुति की है जो एक ओर तो परब्रह्म के रूप में दिखाई देते हैं दूसरे मानवीय गुणों से सम्पन्न एक साधारण

मानव के रूप व क्रिया कलापों को प्रस्तुत करते हैं ।

तुलसी दासजी के चित्रण की यही विशेषता है कि हमे कहीं भी ऐसा नहीं लगता है कि ऐसी परिस्थिति उत्पन्न नही हो सकती है सब कुछ जैसे हमारे सामने घटित हो रहा है ऐसा महसूस होता है ।

मानस के साथ हर काल का पाठक अपना तादात्म्य स्थापित कर सकता है हर युग मे वह समसामायिक ही लगती है उसका अध्ययन करके अध्येयता अपने जीवन को अधिक सुख शान्तीपूर्ण बना सकता है । मानस के अन्दर वर्णित रामराज्य की परिकल्पना आज भी पाठक करता है ।[107]

यूं देखा जाय तो उसका रचना काल इतना पुराना होते हुए भी वह भारतीय जन मानस के लिए सर्वश्रेष्ठ साहित्य धर्मग्रन्थ व राजनीतिक ज्ञान का दीप स्तम्भ बना हुआ है । यह आश्चर्य की बात है कि मानस की लोकप्रियता केवल हिन्दु जाति में ही नहीं है बल्कि अहिन्दी भाषियों और अन्य लोगों के बीच में भी उतनी ही है जितनी की हिन्दीभाषियों में है । तुलसीदास जी के द्वारा वर्णित सारे पात्र आज भी लोकप्रिय है उनमे से राम सीता लक्ष्मण हनुमानजी का स्वरूप है । आज शिक्षित हो या अशिक्षित सभी के मुख पर मानस की चौपाइयां रहती है । उन्हें दोहे सूक्ति सभी कण्ठस्थ होती है । वर्तमान समय में जब पाश्चात सभ्यता का चारों ओर बोलबाला है तुलसी की कलीयुगीन परिस्थितियों की छवि स्पष्ट दिखाई देती है । तुलसी दास ने अपनी मानस की रचना विशिष्ट वर्ग के लिए नही की थी उनका ध्येय तो जो गरीब व अनपढ लोग है जिनका शोषण हो रहा है उन्हे राम नाम का सम्बल देना व उनमें आत्मविश्वास को जगाना है । आज भी राजनैतिक अराजकता का ही बोलबाला है गरीब वर्ग अनेका चुनावों की चक्की में पीस रहा है उस पर कर का बोझा लदा हुआ है । उसकी आवश्यकताएँ दिन प्रतिदिन सीमित होती जा रही है । पहले उसे दाल रोटी मिल जाती थी अब वह

भी नही मिल पाती है । मकानों की उचाईयां बढ़ती जा रही है। तुलसीदास जी ने उस काल की जो अराजक स्थिति को देखा था वह आज भी कलिकाल के रूप में उपयुक्त दिखाई देती है ।[108] तुलसी के मानस के राजाओं को आज भी आवश्यकता है उन्हें तो आज भी गले से लगाने वाले राम की आवश्यकता है जब गांधीजी ने इस कार्य को प्रारम्भ किया था तो उनको भी रामराज्य की आवश्यकता महसूस हुई थी आज भी व्यक्ति को उसके कर्मों से जाना जाये तो संस्कृति की धरोहर पुनः निखड़ने लगेगी । यदि जाति प्रधान समाज की रचना ही होती रही तो वर्तमान समय जैसी अव्यवस्था होगी इस काल मे भी आज व्यक्ति को उसके कर्मो से ही जाना जाता है। यदि व्यक्ति उच्च जाति का है तो उसे ऊँचा पद दे दिया जाता है पिर चाहे वह दुराचारी ही क्यों न हो ? तुलसी ने उस मुगल शासन काल मे इसी अन्याय के विरूद्ध आवाज उठाई थी और आज फिर से उनकी रामचरित मानस के राम की आवश्यकता है जो कि पतन के गर्त में गिरी हुई गरीब जनता को वर्तमान काल की बुराइयों रूपी रावण से मुक्त कर उन्हे अभय दान देदें । राम के केवट निषाद[109] प्रसंगो से आज भी प्रेरणा ली जा सकती है । आज भी भरत जैसे त्यागी व लक्ष्मण जैसे सेवाभावी भाइयों की आवश्यकता है आज पुनः सीता जैसी नारियों की अवश्यकता है जो धन की चकाचौन्ध छौड़कर सीमित साधनों के साथ ही खुशहाल जीवन व्यापन कर सके। आज कौशल्या जैसी उदारमना माओं की जरूरत है जो अपनी सौत के पूत्र व अपने पुत्र में फर्क नहीं देखती है । पुत्र प्रेम भी सबसे बड़ा उदाहरण यहां तुलसी के दशरथ अपने नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा करने में अपने प्राणों का भी त्याग कर देते हैं । आज निषाद व केवट जैसे स्वामी भक्त सेवकों की भी आवश्यकता है जो कि अपने स्वामी कि असमर्थता को समझ गये थे उसके सादे जीवन व्यापन पर उन्हे दुख होता था । आज कैकयी व रावण को ढूंढने की आवश्यकता नहीं है वे तो हर ओर जाने अनजाने मिल ही जायेंगे । आज राम व भरत जैसे एक दूसरे के लिए राज्य का त्याग करनेवाले भाइयों की आवश्यकता है ।[110] राम अपने कर्तव्य पालन में इस कदर रच

चुके हैं कि उन्हें अपने जंगल में होने या महल में होने के फर्क का पता ही नहीं चलता है ।

हनुमानजी आज भी उतने ही लोकप्रिय हैं जितने उस काल में थे ।

तुलसी ने उस काल में वर्तमान काल की बातें इस प्रकार लिखी है कि उन्हें युगद्दष्टा ही कहना होगा । उस काल मे भी शैव व वैष्णव का झगड़ा चलता था तुलसी ने उसका समाधान उन दोनों का आपसी प्रेम बताकर स्पष्ट कर दिया है । राम कथा शिवजी कहते हैं तो शैव मत वाले किस प्रकार इसका विरोध कर सकते हैं । दूसरी ओर शिव की पूजा जब स्वयं रामने करी तो वैष्णव भक्ति उसे कैसे छोड़ सकते हैं तुलसी ने जिस मध्यकाल मे कलिकाल का चित्रण किया है उसको हम यथार्थ मे देख रहे हैं यहां पर आवश्यकता ऐसे युग पुरूष की है में पुनः गांधीजी की तरह से स्वयं कष्ट सहक भी बिगड़ी हुई राजनीतिक व्यवस्था को उसकी गरिमामयी भारतीय संस्कृति को पुन सवांर सके । फिर से राम जैसे राजा की जरूरत है जिसके राम राज्य मे शेर व बकरी एक ही स्थान पर पानी पीते थे । आज वह स्थिति कैसे लाई जाये इसके उपर विचारणाएँ करना आवश्यक है वर्तमान में तो तुलसी दास जी ने जिस अराजकता का बर्णन किया था वही चारों ओर दिखाई देती है ।[111]

जब अंग्रेजों ने भारत वर्ष पर राज्य किया तो ऐसा लगा कि उसकी पूर्व सूचना तुलसी को मिल गयी थी और उन्होने दुष्टों के दमन की नीति को भी आवश्यक माना है । तुलसी दास जीने मुगलकालीन राजघरानों को षडयंत्रों का शिकार बनते देखा था और कैकयी व मंथरा के षडयंत्रों कि रचना करने के लिए उन्हें एक कल्पना प3ाप् हो गई । इस समय हमें राजा को सूर्य समान होना चाहिए की उक्ति याद आती है क्योंकि करो के बोझो तले गरीब जनता दबी जा रही है ।

इस प्रकार तुलसी दास की रामचरित मानस और उसकी प्रासंगिकता राजनैतिक परिवेश के अध्ययन करते हुए हमें उस मुगलकालीन सामन्ती राजनीति के स्थान पर कलियुगीन नेताओं की राजनीति के दर्शन होते हैं फर्क मात्र इतना है कि विजातीय मुस्लिम थे और वर्तमान में प्रजातंत्र का दम भरनेवाले निजस्वार्थों की पूर्ति करनेवाले निचले वर्गों के नाम पर पैसा खानेवाले और उन्ही का शोषण करनेवाले राजकरणी है । अपनी प्राचीन भारतीय संस्कृति को वे सभी भूल चुके हैं अब संस्कृति पर गौरव करने का सवाल ही नही उठता है क्योंकि समसामायिक राजनीति व संस्कृति दोनों ही पतन के गर्त की ओर जा रही है । पाश्चात विचारों का युवा मानस पर विकृत प्रभाव पड़ता है लोग अपना देश छोड़-छोड़ कर विदेशों में जाकर उनके ही ढंग से जीवन व्यापन कर रहे हैं । इसका गरिमामय स्वरूप कालिमामय भर दिया गया है । सारे आदर्शों पर आधुनिकता की गर्द जम चुकी है जबभी कोई इसे उड़ाने की कोशिश करता है सबसे पहले उसी पर मिट्टी रूपी आक्षेप उछाले जाते हैं । रामराज्य की कल्पना धूल मे मिलती जा रही है । संयुक्त कुटुम्ब के स्थान पर छोटे-छोटे स्वतंत्र परिवारों की संस्कृति आ गई है वृद्ध पिता माता को उनकी सेवा के स्थान पर वृद्धाश्रमों में छोड़ दिया जाता है । और इसी प्रकार युवावर्ग खुद अपनी वृद्धावस्था से पहले ही अपनी संतानों के समक्ष स्वयं के रहने की जगह दिखा रहा है । अनुकरण तो बालक की प्रवृत्ति होती है और देश के भावी कर्णधार अपने परिवार के वृद्धों को वृद्धाश्रम में जाते देखते हैं । आज भी कृषक वर्षा पर आधारित है और इसी कारण शोषित होता है, होता रहेगा, मानस की रचना करनेवाले तुलसी का ज्ञान आज भी समसामायिक है व तब भी था ।